

श्रीगुरुदेव

(२)

श्रीगुरुदेव

१२४

ॐ नमः श्रीगुरुवज्रमन्त्राय ॥ ॥ अथ महादानवाचः ॥ ॥
ॐ अथ श्रीमद्दीर्घाक्षसिंहमथागमस्य वज्रक्षुभ्रनगरव
(धु)रुद्रकल्पविवस्वगमन्त्रकनहिमन्त्रसर्वगदक्षिण
पार्ष्वकलियुगजम्बूद्वीपवासकिङ्कणशोभ्यावरुण
स्थरुमोत्रपालद(ग)वागमस्याः पश्चिमकूलकेशव
स्याः पूर्वकूलशंकननयाः वायवकूल(ग)पृच्छगि
निवन्सुदक्षयारुमिरा(ग)उपच्छन्दपी(०)श्री३ ह
नकविनृपाक्षस्वगमनताधिवासिगजनकदवालय

स्थानशी ३ स्वयं उ ये मूल दानक समिधान ॥ अथ ४ आदि
 गालुमहादानवाक ॥ ॥ अं अथ ४ शी मन्त्र गय विनाजमा
 नशी म्कसिंह गथ गन सपर्याय रडक स्य यथ नामलाक
 धामो वेवस्व तमन्व नन सत्य वमा द्राप यान् क कलियूग
 पथ मन्त्र व (६) रु व न ख (७) उ रु व पा क भ न हे म व सा द वा
 स्रकि कृ ३ क कौ ठ क नाग राजा लय नाग वा सा लि ध्र महा
 रुदा दि रु न विप न्नि रु धा ग न्ना धि दि रु उप द्द रा ह पी
 १० उ म्ब दी प (ग) पू रु प र्व न शी स्व य रु ये म् स्थान म धि लि

रु ध्व न (ग) क रु ध्व न विक्रम ध्व न कील ध्व न सर्व ध्व न रु
 सिक ध्व न (ग) पाल ध्व न ग (ध्व न वा रु वे न रा ग स नि धान
 द्वाद म रु र्थ प रि वृ न न पाल म धु ल प क्क न या प धि म कू ल
 प ला व या ३ उ रु व कू ल क भा व या प र्व कू ल वा ग म त्या ४
 द क्रि स कू ल शी म स शी या धि दि रु पू र्थ रु मो ख ग न ना गु
 अ ध्व नी प रु प नि स नि धान शी म दार्या व ला कि रु ध्व न स्य
 विजय ना रु ३ ॥ अथ ४ आदि ५ ॥

१ रुगवान् श्रीमन्दाकिनिकलभाधिवासन गृहदवगात्र
 नाधनपूजनार्थं ॥ स्वरावसूक्ष्मसर्वधर्मात्मन्त्यादि ॥ ४ ॥ श्रीगण
 ॐ रुगवान् श्रीगुम्कसगुवजविद्यागजं नमास्तुते ॥ कर्तुमिच्छामि न
 नार्थमधुलेकवृत्तात्मके निष्प्राप्तमनूकंपा ययूष्याकंपूजनाय ४
 व. ग. न. रु. क. स्य. ॥ रुगवान् प्रभादकर्तुमहर्षि ॥ समान्वाहर्षुमां
 वृद्धाजगदर्थं कयास्तिता ॥ १ ॥ स्तनावाधिसत्वांश्च औवाद्याम
 रुदवगा ॥ २ ॥ दवगा लोकपालांश्च रुगासंवाधिसासनासाधना
 रितगासत्वांश्च यकनिद्रजवद्वधा ॥ ३ ॥ अमृताहं अमृकवजी

रुवः अमृकनामाचार्यः अमृकदवगां अर्चयिष्यामि यथा गका
 पवानः अमृकं पामूपादायः ॥ १ ॥ सिष्यमगत्तुलसहितां सर्वसा
 निधं कर्तुमहर्षवजधूपनिर्यागं यामिवजधूपस्वाहा ॥ ॥
 कलभलीखनय ॥ २ ॥ रावना ॥ ३ ॥ वजामृगादक ०० हं ॥ ४ ॥ नयनफ
 महानफ स्वाहा ॥ ५ ॥ मन्दाकिनीजलत्रूपं विराज्यः मणिटिवंकाव
 जं पविशं नानात्रयमयकलर्षि आकाशजं शुद्धधर्मादि
 यां गडस्थं विराज्य ॥ ६ ॥ गदनस्ववीजपविशामनस्वस्वदवगां वि
 चित् ॥ ७ ॥ स्वद्विजममृमां हानां क ॥ ८ ॥ हानसत्त्वमानीयपूव

॥ ६ ॥ ४ ॥ समयसत्त्वपदमयम् महानागवद्विरुद्धाः बाधिवि
 रुद्रपामृतं तन्त्रिकयम् ॥ विद्रुचसमयदवगाहनदवगाथा
 प्रकीर्तनं चिक्रयम् ॥ निलोजनकाय ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ खलुमाहृणी
 वज्रसत्त्वस्य सर्वपापदीपदहं कालय २ ॥ ६ ॥ ॥ मन् ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥
 खलुमाहृणी वज्रसत्त्वस्य सर्वपापदीपदहं कालय २ ॥ ६ ॥ ॥ मन् ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥
 ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ खलुमाहृणी वज्रसत्त्वस्य सर्वपापविघ्नमात्रात्तस्मात्तन्त्रिक
 ६ ॥ ॥ पका ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ खलुमाहृणी वज्रसत्त्वस्य सर्वपापविघ्नमात्रात्तस्मात्तन्त्रिक
 हाजाः ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ खलुमाहृणी वज्रसत्त्वस्य सर्वपापविघ्नमात्रात्तस्मात्तन्त्रिक

नृधायकं ६ ॥ कयमिला ॥ जाकिस्वानलरवसथुसंगय ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥
 लमूरवस्यादि ॥ सलिरवनकाय ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥
 वि ॥ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥
 मसरुलंजमंसरुलंजिविगं वमं समयं सर्वदवानां रुविनाहं मसंग
 यः ॥ अववर्त्तु रविभ्यामिवाधिविरुद्रुचनसा ॥ मधगमकुलाय
 लि ममानस्यानसंगय ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥
 नृ ॥ सन्निशाना रुयस्य ॥ सर्ववृद्धनिमृदुनाथ ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥
 ॐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

ॐ वज्रगन्धस्वाहा ॥ सिन्धुवंसहजं सारुवं विविगं सारु ॥ गन्धिनं निर्या
 नया मिथर्थं वज्रसिन्धुनिलकलस्य ॥ स्वाहा ॥ अजं काया ॥ ॐ वज्रकु
 वासस स्वाहा ॥ वज्रालंकात्रपञ्चाभयसमूहस्वरुणवज्रवा ॥ ध्यंग
 दं कवचवकुवा ॥ स्वाहा ॥ स्वां द्याय ॥ स्वस्ति वरु कनूगां वरु ॥
 स्वस्ति दवा गमे कका ॥ स्वस्ति सर्वां विरुगानि सर्वं कानं दिगं युवु ॥
 वरुपूष्पा नूला वधदवगाना मम नव ॥ आचार्यसमस्ति पत्र सर्व
 ॥ यममध्यगां स्वस्ति वादिपदगुरु स्वस्ति रुवकु च युष्य ॥
 स्वस्ति वज्रगामा ॥ जे ॥ स्वस्ति प्रयाग न च्च स्वस्ति नाग स्वस्ति

दिवा स्वस्ति मध्यदिनस्ति नः सर्वं स्वस्ति वारुणकु माका ॥ स्वस्ति पा
 पमागम ॥ सद्यसत्वा सद्यप्राभा सद्यरुगावक वला सद्यर्व ॥ सुखि
 नसकु सर्वसकु निरामया ॥ सर्वरुजा विपण्यकु माका विषापा
 पमागम ॥ यानि रुगानि समागमा निरुगानि रुवानथ
 वारु निशु कुर्वकु मेगी सम गं प्रजा रुदिवा वरा गो वरु न कुधर्म
 हागा ॥ ॐ वज्रनेव्यय स्वाहा ॥ स क्रय ॥ ॐ नेव्यय सर्वसंयुक्त स्वा
 धरा कसमपलं ॥ वरु गन्ध वसा पर्म ददामि पनि गृह्णी यथा सु
 खं वज्रनेव्यय स्वाहा ॥ साह ॥ ॐ पचा ॥ मगध व स्वाहा ॥ कस्ति

ॐ त्रिकाम न धा न स्वाहा ॥ धा ला ॥ ॐ न मा र ग व क वी न वी न व मा ।
 य हं रु द ॥ ॐ म हा क ल्या ग्नि स न्नि रा य हं रु द ॥ ॐ ज रा त्म क र्वा के रा य
 हं रु द ॥ ॐ दं द्रा क ना नू ग रि ष ष म र्वा य हं रु द ॥ ॐ स ह स रू ज रा
 स्य ना य हं रु द ॥ ॐ य न भु पा ण रि भू ल ख द्वा ग धा वि य हं रु द ॥
 ॐ व्या ध जि नौ व न ध ना य हं रु द ॥ ॐ म धि मां ध का न ष प वा य हं
 रु द स्वा हा ॥ ॥ म न वि थ ॥ न गु रि ना मा व दू न त्र का धा न ना
 धि प र्शि म पा द प म्ना ॥ ॥ हा ना प रि षा ह न मा ह ना ला य दी प मा ला
 न त्र य कि न ग व ज दी प नि र्या म या मि ऊं आ ॥ हं व ज दी पं दि य

रु द स्वा हा ॥ पू ष्य न्या म ॥ प च प हा न पू जा ॥ ता य पू जा ॥ य ध र्मा
 हं रु द रु वा रु द न यां ग था ग न क व द रु षा थ यानि ना ध न वं वा दि
 म हा श्र म ली ॥ ॥ दं क र्मा कि ॥ ॐ अ काल मू र्खे सर्व ध र्मा ना मा श्र
 मू त्य न त्वा ॐ आ ॥ हं रु द स्वा हा ॥ दं क र्मा कि ॥ ॐ म र्शे पी क मा न रु ना
 य वा धि स त्वा य म हा स त्वा य म हा का र्त्तिका य नं दू ल दं क र्मा रु
 त्यं संप्र द श ॥ ॥ धू रि पू जा या य वा क्य ॥

धनपंचगव्यवियगुवाक् ॥ ॐ नन्दारुद्रजयाशोभा कपीनाश्वरु
 पावनिः सर्वपापविनासार्थः प्रसिद्धस्वसमागरी ॥ ॥ सिद्ध
 नयगु ॥ ॥ ॐ नमः श्रीकालाश्वय ॥ उद्यागाननचक्रगाः नि
 लधूमावियुद्धमालाश्वनादग्धविजिगुयागिलाकमहिना
 पियुधवापुना वृद्धहाननसावित्राविकलयास्वानन्दसदा
 हृदाश्वारुवाविवावधविनहितावावाहिकापाशुवध ॥ ॥
 निर्मोनाविदिनसमसुलगना काद्यादिवर्धवना प्राकाल
 कलनाकलाः मृगसवासुसुसुसुशपमा विशावृद्धकदंबक
 ॥ ॥

१२

दहमिया चक्रगुवादिनीसानेदालिलिगाईगावमाहिस्व
 उवावावाहिकाचगसि ॥ ॥ ॥ स्नानयाकवाक् ॥
 यत्संगलंसकलसत्त्वहृदिस्तिगस्यसर्वात्मकस्यवनधर्मकला
 धिपस्यनिर्गद्यदायजनकस्यमहासखस्यनसंगलेरुवडुन
 पनमालिषक ॥ ॐ वूं गूं जिं र्वं हूं गूं गूं र्वं हूं ॥ धनि
 विम्वसमाद्धर्मा स्वद्धाः उद्धाः नविला ॥ ॥ गृहानविना
 प्याथरुद्धकर्मसमूहव ॥ ॐ गूं गूं सर्वगथागनश्रुतिधकस
 मप्रियहूं ॥ ॥

१३

क्रमार्पण ॥ ॥ अथ पापवपनिहाना अस्मकं च मया विना यत्न
 नमधिकं नार्थं न सर्वं क्रतुमर्हसि ॥ क्रतुमर्हं नमस्व द्वावना
 नमसाय व ॥ वक्राद्या आकपालाश्च यानि ह्येता विविदिताः
 आनि स्वस्ति च पृथिव्य कृत्वा दाने पण गृह ॥ यत्कर्म इत्तुर्न
 किं विनमया मूढधिया पुनः क्रतुवत् त्वया नाथ यदि ना १४
 गा भदहिना ॥ न क्रतुदवना सर्वं क्रतुर्वै पणिमासुव ॥ क्रतु
 स्वनपनः क्रतुगहाय नमः ॥ यत्कर्म कायर्ज पापं यत्कर्म
 वाक्यं पापं यत्कर्म विदुर्ज पापं न सर्वं दृष्टया मयर्ह ॥ नमा

सुगं वृद्धं न कलम वनाय न मा सुगं सत्प्रकाशकामिन
 सुगं पृथग्विद्यापनाय माव न सर्ववका मां स हला वरु ॥
 न क्रतु पृथग्विद्यापनाय माव न सर्ववका मां स हला वरु ॥
 मयं न यवा ॥ आदौ कल्याणं मध्य कल्याणं पर्यवसानं
 न कल्याणं स्वर्गं स्वव्यजनं कवलं पविर्पूषं पर्यवसानं
 क्रतुर्वै संपाकामयति स्म आयुर्विदिय ॥ अथिष्टु रजि
 पहास स्वावे जनभन संगा नमः सि प्रहृदि ॥ १५ ॥
 मरुनिद्याय ॥ अहानं मरुलं वम अपतिनी जिता रु प्रे सलाकया
 वेद्यवाजा लाकातां निमि नयथा ॥ उचक्र २ समकवक्रु दिव्यवक्रु

वि। गधन स्त्रोहा ॥ ॥ दक्षिण काय ॥ उं नमो रुगवत मं शशी कू मा
 नरु नाय वाधि सखाय महा सखाय महा कान्ति का नाय शुभ वव जावा
 र्थाय ॥ यथा मक गो मख लु धा उ मय द सखा दानं सं प्र दय ॥ ॥
 स्वक पूजा याय ॥ स्वकूय वा निरु कूय भक्ति कर्त्य पनाय च पशु
 क्रद कने च वर वक सिद्धि नमस्तुते ॥ ॥ वाहन यान मरु कन ॥
 हित्वा वेऽर्जुनि पथं सुगतिं पद मा पूया न ॥ नयथा ॥ उं गधन ॥
 वि। गधन २ सर्व कर्मा वन वि। गधन स्त्रोहा ॥ ॥ रुस्य पम
 जानक ॥ पूर्व ज नरु नं पापं पशु ज नय जाय न ॥ सर्व पाप वि
 निमूकं स्वर्ग वा सं प्र यच्छ मिश ॥ ॥

रुन वं क वृ वक्षु रं विदू पा उ धनं क नं प्र का सनं महा नार्थ न मा मि
 रीष नान न ॥ ॥ नमा ज रु मरु का रय ॥ वृ क्ता य सी महा द वी ॥
 न सान्निभ को मा नी न क वक्षुं गी विष्णु वी च न मा रु न म वा ना हि धा
 न नृ पी च वृं द्या पी न वि श हानि मा सी का लिका द वी महा ल की न
 मा रु न ॥ गक्ष प नि व रु कं च महा काले न मा मि ॥ रुन वं रीष नं वा
 डंग धनार्थ न मा म हं ॥ ॥ सूर्य च द स मंद वं धा गी पू ग वृं नं ग ॥
 रुह स्प नि र्गार्ग वं च न वी जं ना ड क ड क ॥ वृ न व जा क नं नार्थ कं रु पा
 वि कू मा न कं गहन रु ग र्ग वं च क र्क का या च न प्र दा ॥ सर्व पद व
 सं हा च महा वि शी मह र्दिका ॥ धन ना डु वि नू टं च वि नू पा रु कू
 वन कां ॥ भस्त्रा दी नी न प र्य नं प्र ल मा मि दि वा निर्ग ॥ ॥

नमो नि पूरि वली सिद्धि कूर्व नु सततं मायि

१८

१८-

॥ लाकः श्वरः छीलसाकः भूनाथ गुहसाग

नमः भूमिनामस्तुभ्यो नमामि भूमिनामस्तुभ्यो ॥ श्रीं कान्तसहाना
थं कुरुते धर्मं विज्जमानं भूमिनामस्तुभ्यो नमामि ॥ श्रीं कान्तसहाना
नमाम्यहं ॥

सगं (अथ) कलु उद्यान संकारं फलं कादिजीविनं ॥ हं सवा
 हनसं पस्थं निभा कनं नभसदा ॥ भनया ॥ वृं ऊनं गुविभुर्च
 सर्वसिद्धि महाकलं ॥ वेधनं न महं वन्द. सर्वसिद्धि प्रदायकी ॥
 मामकिया उदिना कं समावर्ध लाकान समसपला ॥ गुम्ब
 केक मूखादिन्या पञ्च वेधं समपला. सर्वसत्त्व विविङ्गांगि
 उगान द्वादश विना ॥ त्वक्रोदि भक्तु विजो भो दिव्य मूकठ २०
 मल्लिना. नवयोवन समपत्रा धा उभा हवरांगत्वा ॥ सुधा
 नसधना माहिन मरु सुन सदीवी ॥ ॥

वसंधा ना सदान्ना दा विडन वना वली साधनो पायिका वरु ल
 श्री सिद्धि वलपदा ॥ वधुधनाया ॥ ॥ समाल कलिवकाजं मूल
 लाइके धा विना कार्य सिद्धि प्रदायाय. मन्त्र मा मिग (अथ) वेधं ॥
 गल्ल मेया ॥ महाद्वेषा कला वाकं. ला लुजि कारु यंक न. द्वाद
 भादि स महाकजं. वजवी वं न मा मिह ॥ महा काल या ॥ २१
 ऊननी सर्व सत्वानां. सर्व नाग निवा निनी पथे न कान मस्या मि स
 वं सत्वार्थ दायनी ॥ प्रक न काया ॥ प्रहा पा न मिता गुच्छा वाम
 घा भगधा वि (अथ) गलाह विना भर्थ गजव माध न धनी ॥
 रुद्र वध महा वा वरु क्रपा भा क न र्जनी. सर्व इह निरुक्त नंद. अ
 वलवी वं न मा म्यहं

यागवनेंजगन्नाथं युवचावनमसदा सर्वसत्त्वास्त्रवाध्वनं ।
यागववनमाम्यहं ॥ हानदाकिमहादवी सहजानदनुपिनी
प्रहाहास्वतूपासा वन्दे माकदायनी ॥ यागवनीया ॥

नमामि वज्रवाहि सर्वपापप्रभाचरी मानविध्वसनी दवी वृद्धत्वं कलदाय
नी ॥ १ ॥ यथाचला दूतामृक कभी तिलोचनी सध्यासिद्धनवधुमि कल्लिख
धनी ॥ २ ॥ पञ्चमधु नीरसाहो स्वेथखडाङ्ग क विनाकनवज कनारस
वन्दवज्रविनामिनी ॥ ३ ॥ मृदायकथनादहामधुमालावीरुषिनीः ली
लाहाभ्यमयाताया वन्दे तुलाकसन्दरी ॥ ४ ॥ हेनवायमृखायैव विक्रा
ककल चर्विकाः विध्वंसविध्वानाक वन्दे हीमहयैकनि ॥ ५ ॥ जगवि
नागयामेधवावाताय विसृष्टिनाः समूहना महादवी वन्दे लोकायना
नीनी ॥ ६ ॥ पञ्चमृक सदायानै पञ्चसाक्षि महाजनैः गीतवाधलता

२२

निर्ध्वन्दवी सर्वदिनी ॥ ७ ॥ सहवसाहता नन्दनिर्ध्वन्दवी सवालयाः न
धचनं नृपनी वन्दे नृत्त्ययनायनी ॥ ८ ॥ त्वन्दविमिद्विदाशी च यागमवा
नसदा मनीः युद्धनिर्वातदाशी वा वन्दे वृद्धममाहने ॥ ९ ॥ ॐ ॥
ॐ नमो वज्रवाहा ॥ नमस्तु वज्रवाहा दिव्यरूपिण्यनुपिनी काकिमूर्तिद
यादेविनमस्तु वज्रवाहिनी ॥ १० ॥ वधुपुष्प सहस्रभक्तपिजिनं नमो
हिमिनी प्रदाता च नमस्तु वज्रवाहिनी ॥ ११ ॥ द्वादसवर्षसवर्धनवदृष्टसुन
पिनी तुलायै व्यापिनी देवि नमस्तु ॥ १२ ॥ दशैककं रीचसंतापकं
वासिनी त्रिनकुविष्यवर्धन नमस्तु ॥ १३ ॥ देवहनुक सगुपतिर्लोकजिने
धनी कर्किकपालकैतायेन नमस्तु ॥ १४ ॥ खड्गाङ्गनाम सैका नैव नकुतो
विष्वमासीकुकिमूर्तिप्रदातया नमस्तु ॥ १५ ॥ पुष्कमालाधनादवी पञ्च
मृदाविरुषिता हाताकनधनी पूना नमस्तु ॥ १६ ॥ नमस्तु कपाला

२३

ओ शंभु कर्तिका काल मुखी च नमो नमः ॥ ८ ॥ एक वक्ता सवान्
रादिकुजासूर्यमधुल पादां गद स्थितादवी नमः ॥ ९ ॥ सूर्यमधुल
मध्यस्थं किरीटामक कालकं जे लाके माह निदवी नमः ॥ १० ॥ सर्व
पापह नादवी सर्वपापविनासनी धनमाकु प्रदातया नमः ॥ ११ ॥ सर्व
मरु प्रमईनी प्रत्यकुति दिवानिर्सी भासापू न प्रयत्नादक नमः वज्रया
गौनी ॥ १२ ॥ इति वज्रयागिनोस्तु ॥ ॥ ॥ (४) ॥

MS. ARCHIVES

124

MS. ARCHIVES